उत्तर प्रदेश की प्रमुख नृत्य

राज्य में लोकगीतों के साथ-साथ लोक नृत्य का इतिहास भी प्राचीन है। राज्य के विभिन्न भागों में इन नृत्यों के विभिन्न प्रकार भिन्न भिन्न अवसरों पर देखने को मिलते हैं.

✷ धुबिया नृत्य

यह जो भी समुदाय द्वारा किया जाने वाला नृत्य है, जिसमें नृत्य के माध्यम से धोबी व गधे के संबंधों के तुलनात्मक अध्ययन की जानकारी प्राप्त होती है।

✷ ख्याल नृत्य

पुत्र रतन के जन्मोत्सव पर ख्याल नृत्य किया जाता है। इसके अंतर्गत रंगीन कागजों तथा बांसों की सहायता से मंदिर बनाकर फिर से उसे सिर पर रख का नृत्य किया जाता है।

✷ कलाबाजी नृत्य

इस नृत्य को अवध क्षेत्र के लोग करते हैं। इसमें नर्तक मोरबाजा लेकर कच्ची घोड़ी पर बैठकर नृत्य करते हैं।

✷ कार्तिक नृत्य

यह बुंदेलखंड क्षेत्र में कार्तिक माह में मृतकों द्वारा श्री कृष्ण तथा गोपी बनकर किया जाने वाला नृत्य है।

✷ दीपावली नृत्य

बुंदेलखंड के अहीरों द्वारा अनेकानेक दीपकों को प्रज्वलित करके किसी घड़े, कलश, थाली तथा परात में रख कर तथा उन प्रज्वलित दीपों को सिर पर रख कर नृत्य किया जाता है।

✷ राई नृत्य

यह नृत्य बुंदेलखंड की महिलाओं द्वारा किया जाता है। यहां की महिलाएं इस नृत्य को विशेषत: श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर करती है। इस को मयूर की भांति किया जाता है। इसलिए यह मयूर नृत्य भी कहलाता है।

✷ पाई डंडा नृत्य

बुंदेलखंड इलाके के अहीरों द्वारा छोटे-छोटे डंडे लेकर गुजरात के डांडिया नृत्य के समान यह नृत्य किया जाता है।

✷ देवी नृत्य

यह नृत्य अधिकांश बुंदेलखंड क्षेत्र में ही प्रचलित है। इस लोक नृत्य में एक नर्तक देवी का स्वरूप धरकर अन्य नर्तकों के सामने खड़ा रहता है तथा उसके सम्मुख सभी नृत्य करते हैं।

✷ नटवरी नृत्य

यह नृत्य प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र के अहीरो द्वारा किया जाता है। यह नृत्य गीत व नक्कारे के सुरों पर किया जाता है।

✷ छपेली नृत्य

एक हाथ में रुमाल तथा दूसरे में दर्पण लेकर किए जाने वाले इस नृत्य में आध्यात्मिक समुन्नति की कामना की जाती है।

✷ छोलिया नृत्य

राजपूतों द्वारा यह नृत्य विवाह उत्सव पर किया जाता है। इस नृत्य को करते समय एक हाथ में तलवार तथा दूसरे में ढाल होती है।

✷ चरकुला नृत्य

ब्रजवासियों द्वारा किए जाने वाले इस घड़ा नृत्य में बैलगाड़ी अथवा रथ के पहिए पर अनेक घड़े रखे जाते हैं, फिर उसे सिर पर रख कर नृत्य किया जाता है।

✷ धुरिया नृत्य

बुंदेलखंड के प्रजापति (कुम्हार) लोग, इस नृत्य को स्त्री वेश धारण करके करते हैं।

✷ पासी नृत्य

पासी जाति के लोगों द्वारा यह नृत्य किया जाता है। इस नृत्य में सात अलग-अलग मुद्राओं की एक गति तथा एक ही लय में युद्ध की भांति नृत्य किया जाता है।

✷ शेरा नृत्य

यह नृत्य बुंदेलखंड वासी कृषक अपनी फसलों को काटते समय होर्षालाश प्रकट करने के उद्देश्य से करते हैं।

✷ धीवर नृत्य

यह नृत्य अनेक शुभ अवसरों पर विशेष रूप से कहार जाति के लोगों द्वारा किया जाता है।

✷ जोगिनी नृत्य

इस नृत्य को विशेषकर रामनवमी के त्यौहार पर हर्षोल्लास के साथ किया जाता है । इसके अंतर्गत कुछ पुरुष महिलाओं का रूप धारण करके साधुओं के रूप में नृत्य करते हैं।

✷ धोबिया नृत्य

यह नृत्य मांगलिक शुभ अवसरों पर किया जाता है। इसमें एक नर्तक अन्य नर्तकों के घेरे के अंदर कच्ची घोड़ी पर बैठकर नृत्य करता है।

✺राज्य में नृत्य परंपरा से संबंधित तथ्य

- लोक नृत्य नटवरी में नर्तक कुश्ती लड़ते, कबड्डी खेलते तथा चिड़ियों जैसा व्यवहार करते है।
- करमा लोकनृत्य के अंतर्गत नर्तक फुदकते हुए वृक्षों से पत्तियां तथा डालियां काटकर पूजारी को लाकर देते हैं तथा नृत्य करते हुए इन वृक्षों की पत्तियां तथा शाखाएं शराब के साथ नर्तको द्वारा चढ़ाई जाती है।
- डोम जाति के प्रति आदर प्रदर्शित करने हेतु धसीया तथा गोंड जनजातियां कें नर्तक डोमकच नृत्य करते हैं।
- मिर्जापुर के घरकरही नृत्य में पुरुष उछल कूद तथा कलाबाजी का प्रदर्शन करते हैं।

नोट : यह पीडीऍफ़ विभिन्न स्रोतों से तथ्य एकत्रित कर बनायीं गयी है | यदि इसमें कोई त्रुटी पायी जाती है तो नॉलेज हब संचालक की जिम्मेदारी नहीं होगी |

अन्य पीडीएफ डाउनलोड करने के लिए यहाँ क्लिक करें या गूगल पर सर्च करें - Knowledge Hub PDF

@knowledgekahub +918619657230 @knowledgekahub

KEEP YOUR SURROUNDING GREEN & CLEAN